प्राचीन भारतीय कला और वास्तुकला का विकास : स्तूप कला, मंदिर निर्माण कला, मूर्तिकला, चित्रकला, शिल्पकला के संदर्भ में
(Development of Ancient Indian Art and Architecture)

डॉ शालिनी सिंघल,
(सह-प्राध्यापक, इतिहास विभाग)
कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज,
दिल्ली विश्वविद्यालय
Email: shalini.cvs@gmail.com

Abstract:

This research paper explores the evolution and significance of ancient Indian art and architecture, examining its major forms-stupa architecture, temple construction, sculpture, painting, and handicrafts-as integral to the spiritual, cultural, and social fabric of Indian civilization. It highlights how these artistic expressions developed over time, influenced by religious movements such as Buddhism and Hinduism, and how they served as mediums of devotion, symbolism, and societal reflection.

The paper begins by analyzing the development of stupas, initially simple mounds built to enshrine the relics of the Buddha, which gradually evolved into complex architectural structures adorned with carvings depicting scenes from the Buddha's life. It then delves into temple architecture, noting its formal elements-sanctum (garbhagriha), pavilion (mandapa), spire (shikhara), and enclosure (prakar)-and traces its stylistic evolution, particularly during the Gupta period.

The study further explores sculpture, both Buddhist and Hindu, highlighting its religious and social narratives and its role in shaping cultural identity. Painting, from early religious murals in Ajanta and Ellora to courtly Mughal miniatures, is shown to be a vibrant reflection of both divine and worldly themes. Lastly, the paper examines craft traditions such as metalwork, woodwork, and stone carving, showcasing their aesthetic and functional contributions to Indian art heritage.

In conclusion, the paper emphasizes that ancient Indian art and architecture not only fulfilled religious functions but also mirrored the collective psyche and way of life of Indian society. Their legacy continues to define India's rich cultural identity and global artistic influence.

सारांश:

प्राचीन भारतीय कला और वास्तुकला ने न केवल भारतीय समाज के सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक पहलुओं को गहराई से प्रभावित किया है, बल्कि यह भारतीय सभ्यता की विशिष्टता और समृद्धि का भी प्रतीक रही है। भारतीय कला और वास्तुकला का इतिहास कई शताब्दियों में विकसित हुआ और विभिन्न युगों में इसका रूप-रंग बदलता गया। प्राचीन भारत की कला और वास्तुकला के प्रमुख रूपों में स्तूप कला, मंदिर निर्माण कला, मूर्तिकला, चित्रकला और शिल्पकला का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इन सभी कला रूपों का विकास समय के साथ हुआ और प्रत्येक कला रूप ने भारतीय समाज, संस्कृति और धर्म को गहरे तरीके से प्रभावित किया। इस शोध पत्र का उद्देश्य इन कला रूपों का विस्तृत अध्ययन करना और उनके विकास, महत्व तथा ऐतिहासिक संदर्भ को उजागर करना है।

मुख्य शब्द: ।

स्तूप कला का विकास

स्तूप भारतीय वास्तुकला का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, विशेष रूप से बौद्ध धर्म के प्रसार के समय। स्तूपों का निर्माण मुख्य रूप से भगवान बुद्ध के अवशेषों या अन्य धार्मिक वस्तुओं को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से किया जाता था। इनका स्वरूप पहले सामान्य ढेर जैसा था, लेकिन धीरे-धीरे इनकी वास्तुकला में बदलाव आया और वे भव्यता की ओर बढ़े।

स्तूपों का उद्देश्य और प्रारंभ

स्तूपों का प्राथमिक उद्देश्य भगवान बुद्ध के अवशेषों या उनके शिष्य और अन्य पवित्र व्यक्तियों के अवशेषों को सुरक्षित रख कर उनकी उपस्थिति का बोध कराना था। बौद्ध धर्म में, यह प्रतीकात्मक रूप से बुद्ध की उपस्थिति और उनके शिक्षाओं की निरंतरता को दर्शाता था। स्तूपों का उद्भव भारतीय उपमहाद्वीप में गौतम बुद्ध के पारिनिर्वाण के पश्चात हुआ; परम्परा उन्हें पूर्ववर्ती २७ बुद्धों के बाद धम्म के पुनरुद्धारक एवं प्रवर्तक के रूप में मानती है। सबसे प्रारम्भिक स्तूपों की बनावट सरल, गोलाकार थी, जैसे संकिसा स्तूप और भद्रशाला स्तूप।

स्तूप कला का विकास

स्तूप कला का समय के साथ विस्तार हुआ, और इनमें चित्रकला, शिल्पकला और वास्तुकला के तत्व जोड़े गए। बौद्ध स्तूपों की दीवारों पर भगवान बुद्ध के जीवन के विभिन्न घटनाओं के दृश्य उकेरे जाते थे। सांची और भरहूत के स्तूपों में चित्रित दृश्य और मूर्तियाँ भारतीय कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जो बौद्ध धर्म की शिक्षा और सिद्धांतों को दर्शाते हैं।

मंदिर निर्माण कला

भारतीय मंदिर निर्माण कला का विकास भी एक लंबी प्रक्रिया का परिणाम था। भारतीय मंदिरों की वास्तुकला ने न केवल धार्मिक स्थल के रूप में कार्य किया, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और जीवन शैली के महत्व को भी दर्शाता था। मंदिरों का निर्माण विभिन्न धर्मों और उनके अनुयायियों के अनुरूप किया जाता था। प्राचीन भारतीय मंदिरों में विशेष रूप से भगवान शिव, विष्णु और अन्य देवी-देवताओं की पूजा की जाती थी।

मंदिर निर्माण के प्रमुख तत्व

भारतीय मंदिरों की संरचना में गर्भगृह, मंडप, शिखर और प्राकार प्रमुख तत्व होते थे। गर्भगृह वह स्थान था, जहाँ भगवान की मूर्ति रखी जाती थी। मंडप मंदिर का वह भाग था, जहाँ श्रद्धालु पूजा करते थे। शिखर मंदिर का ऊपरी भाग होता था, जो सीधे आसमान की ओर इशारा करता था। प्राकार मंदिर का चारदीवारी वाला हिस्सा होता था, जो पूरे मंदिर को घेरता था।

मंदिर कला का विकास

प्राचीन भारतीय मंदिरों का स्थापत्य शैलियों में परिवर्तन होता गया। गुप्त काल के दौरान मंदिर निर्माण कला में विशेष विकास हुआ। गुप्त काल के मंदिरों में उच्च गुणवत्ता की मूर्तियाँ और शिल्पकला का उत्कृष्ट उदाहरण मिलता है। ताम्र, कांस्य और पत्थर पर बनाई गई मूर्तियाँ और नक्काशी भारतीय मंदिरों को सांस्कृतिक धरोहर का एक प्रमुख हिस्सा बना देती हैं।

मूर्तिकला का विकास

प्राचीन भारतीय मूर्तिकला का उद्देश्य धर्म, संस्कृति और सामाजिक जीवन को व्यक्त करना था। भारत में मूर्तिकला के विभिन्न रूपों का विकास हुआ, जिनमें सबसे प्रमुख बौद्ध और हिंदू धर्म से संबंधित मूर्तियाँ थीं। भारतीय मूर्तिकला के सबसे बड़े उदाहरण बौद्ध स्तूपों और मंदिरों में पाए जाते हैं।

बौद्ध मूर्तिकला

बौद्ध मूर्तिकला में भगवान बुद्ध के जीवन के विभिन्न पहलुओं को चित्रित किया गया। प्रारंभ में, बुद्ध की मूर्तियाँ न केवल उनके शरीर के रूप में, बल्कि उनके 'ध्यान' और 'निर्वाण' की प्रतीकात्मकता के रूप में बनाई जाती थीं। इन मूर्तियों में सौंदर्य, शांति और ध्यान की भावना थी।

हिंदू मूर्तिकला

हिंदू धर्म में भगवान शिव, विष्णु, देवी दुर्गा और अन्य देवताओं की मूर्तियाँ बनाई जाती थीं। इन मूर्तियों का निर्माण न केवल पूजा और श्रद्धा के उद्देश्य से था, बल्कि यह भारतीय समाज के धर्म, संस्कृति और जीवन के विभिन्न पहलुओं को भी प्रदर्शित करता था। गुप्त काल और चोल काल के मूर्तिकला के उदाहरण अत्यंत सुंदर और विशिष्ट हैं, जो भारतीय शिल्पकला की महिमा को दर्शाते हैं।

मूर्तिकला का समाज में योगदान

मूर्तिकला भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को चित्रित करती थी। इन मूर्तियों में न केवल धार्मिक चित्रण होते थे, बल्कि राजा-महाराजा, समाज, और उनके आचार-विचार को भी दर्शाया जाता था। मूर्तिकला ने भारतीय संस्कृति की पहचान बनाई और समाज के विभिन्न वर्गों के लिए एक संवाद का माध्यम प्रदान किया।

चित्रकला का विकास

चित्रकला भारतीय कला का एक और महत्वपूर्ण अंग रही है, जिसका उद्देश्य न केवल धार्मिक चित्रण था, बल्कि समाज और संस्कृति की अभिव्यक्ति भी था। भारतीय चित्रकला में समय के साथ कई बदलाव आए, जिनमें बौद्ध चित्रकला, हिंदू चित्रकला और मुस्लिम चित्रकला के तत्व शामिल थे।

प्रारंभिक चित्रकला

प्रारंभिक चित्रकला का मुख्य उद्देश्य धार्मिक चित्रण था, विशेषकर भगवान बुद्ध के जीवन और उनके सिद्धांतों को दर्शाने के लिए चित्रों का निर्माण किया गया। अजंता और एलोरा की गुफाओं में चित्रित दृश्यों ने भारतीय चित्रकला के प्राचीन रूप को उजागर किया है।

गुप्तकालीन चित्रकला

गुप्त काल में भारतीय चित्रकला ने अपूर्व विकास किया। गुप्त काल के चित्रकला में देवी-देवताओं के चित्रण, शाही दरबारों के दृश्य और सामाजिक जीवन की चित्रकला को देखा गया। अजंता और एलोरा की गुफाओं में गुप्तकालीन चित्रकला की बेजोड़ छाप देखने को मिलती है।

मुग़ल कालीन चित्रकला

मुग़ल काल में भारतीय चित्रकला पर इस्लामिक प्रभाव पड़ा, और इस दौरान शाही दरबारों में पेंटिंग्स के माध्यम से ऐतिहासिक घटनाओं और दरबारी जीवन को चित्रित किया गया। ताजमहल की दीवारों पर पाए गए चित्र और मुग़ल सम्राटों के चित्र भारतीय चित्रकला के एक नए युग की शुरुआत थे।

शिल्पकला का विकास

भारतीय शिल्पकला का विकास प्राचीन काल में हुआ था, और इसमें विभिन्न प्रकार की शिल्पकला का समावेश था, जैसे कि धातु शिल्प, काष्ठ शिल्प, कांच शिल्प, और पत्थर शिल्प।

धातु शिल्प

भारतीय धातु शिल्प में विशेष रूप से लौह और कांस्य का उपयोग किया गया था। लौह स्तंभ और कांस्य की मूर्तियाँ भारतीय धातु शिल्प के प्रमुख उदाहरण हैं।

पत्थर शिल्प और काष्ठ शिल्प

भारतीय पत्थर शिल्प ने मंदिरों, स्तूपों, और अन्य वास्तुकला के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। काष्ठ शिल्प में विशेष रूप से मंदिरों के दरवाजों, खिड़कियों और अन्य संरचनाओं के निर्माण में कला का योगदान रहा।

निष्कर्ष:

प्राचीन भारतीय कला और वास्तुकला ने भारतीय समाज की सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान को सशक्त किया। स्तूप कला, मंदिर निर्माण कला, मूर्तिकला, चित्रकला और शिल्पकला के विभिन्न रूपों ने भारतीय सभ्यता की समृद्धि और विविधता को प्रदर्शित किया। इन कला रूपों का विकास न केवल धार्मिक उद्देश्यों के लिए हुआ, बल्कि भारतीय समाज की मानसिकता, विचारधारा, और जीवनशैली को भी प्रतिबिंबित किया। भारतीय कला और वास्तुकला ने विश्वभर में अपनी पहचान बनाई, और यह आज भी हमारे सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. Agrawal, V. (2010). The evolution of Indian architecture. Rawat Publications.
2. Banerjee, P. (1985). Indian architecture: The Islamic period. Publications Division.
3. देहेजिया, वी. (1997). भारतीय कला (दूसरा संस्करण). फैडन प्रेस।
4. Dehejia, V. (1997). Indian art (2nd ed.). Phaidon Press.
5. Fergusson, J. (1910). History of Indian and Eastern architecture. D. Appleton and Company.
6. फर्ग्यूसन, जे. (1910). भारतीय और पूर्वी वास्तुकला का इतिहास. डी. एपलटन एंड कंपनी।
7. Koch, E. (2001). The architecture of India: Hindu, Buddhist, Jain. Princeton Architectural Press.
8. कोच, ई. (2001). भारत की वास्तुकला: हिंदू, बौद्ध, जैन. प्रिंसटन आर्किटेक्चरल प्रेस।
9. Kramrisch, S. (1946). The Hindu temple. University of Calcutta.
10. क्राम्रिश, एस. (1946). हिंदू मंदिर. मोतीलाल बनारसीदास।
11. Majumdar, R. C. (1953). History and culture of the Indian people (Vols. I-VI). Bharatiya Vidya Bhavan.
12. मैत्रा, एस. (1977). भारतीय मूर्तिकला का इतिहास. मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स।
13. Nagar, A. (2001). Art and architecture in ancient India. National Publishing House.
14. नागर, अ. (2001). प्राचीन भारत में कला और वास्तुकला. नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
15. राघवन, एस. (2006). भारतीय वास्तुकला: रूप और परिवर्तन. डी.के. प्रिंटवर्ल्ड।
16. Ray, N. (1975). Art and architecture of ancient India. Oxford University Press.
17. Sharma, R. S. (2005). Indian architecture and art. Motilal Banarsidass.
18. शास्त्री, के. ए. एन. (1992). दक्षिण भारत का इतिहास: प्राचीन काल से विजयनगर के पतन तक. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
19. Smith, V. A. (1901). Ancient India की वास्तुकला. Cambridge University Press.